भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-2 /अंक-14 / अगस्त-2022

आजादी का अमृत महोत्सव

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2 /अंक -14/ अगस्त -2022

For Private Circulation Only

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

अगस्त माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - दक्षिणायन ऋतु - वर्षा

सोम	01 श्रावण शु. चतुर्थी,विनायक चतुर्थी, श्रावण सोमवार व्रत	08 श्रावण शु. एकादशी, पुत्रदा एकादशी व्रत	15 भाद्र. कृ. चतुर्थी, बहुला व संकष्टी चतुर्थी, स्वतंत्रता दिवस	22 भाद्र. कृ. एकादशी, अजा/जया एकादशी व्रत	29 भाद्र. शु. द्वितीया
मंगल	02 श्रावण शु. पंचमी, नाग पंचमी, कल्की जंयती	09 श्रावण शु. द्वादशी, प्रदोष व्रत, दामोदर द्वादशी	16 भाद्र. कृ. पंचमी	23 भाद्र. कृ. द्वादशी	30 भाद्र. शु. तृतीया, हरियाली तीज, गौरी हब्बा
बुध	03 श्रावण शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी, आदि पेरक्कू	10 श्रावण शु. त्रयोदशी	17 भाद्र. कृ. षष्ठी,हल षष्ठी, राधण छठ, उपछठ व्रत	24 भाद्र. कृ. द्वादशी, पर्यूषण पर्व, बछ बारस, प्रदोष व्रत	31 भाद्र. शु. चतुर्थी, गणेश चतुर्थी, डांडिया चौथ
गुरू	04 श्रावण शु. सप्तमी, तुलसीदास जंयती	11 श्रावण शु. चतुर्दशी-पूर्णिमा रक्षाबंधन, पूर्णिमा व्रत	18 भाद्र. कृ. सप्तमी, कृष्ण जन्माष्टमी, शीतला सातम	25 भाद्र. कृ. त्रयोदशी, मासिक शिवरात्री	
शुक्र	05 श्रावण शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी	12 श्रावण शु. पूर्णिमा-प्रतिपदा संस्कृत दिवस, गायत्री जंयती	19 भाद्र. कृ. अष्टमी, दही-हाण्डी, मासिक कार्तिगाई	26 भाद्र. कृ. चतुर्दशी	
शनि	06 श्रावण शु. नवमी	13 भाद्र. कृ. द्वितीया, कजली तीज सिंजारा	20 भाद्र. कृ. नवमी, गोगा नवमी, रोहिणी व्रत	27 भाद्र. कृ. अमावस्या, पोळा पर्व, मारबत	
रवि	07 श्रावण शु. दशमी, मित्रता दिवस	14 भाद्र. कृ. तृतीया, सातुडी /कजली तीज	21 भाद्र. कृ. दशमी	28 भाद्र. शु. प्रतिपदा	

भाद्र.- भाद्रपद कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

नाग पंचमी

नाग पंचमी को एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है। जिसमे नाग देवता की पूजा अर्चना की जाती है। इस दिन नाग देव की पूजा करने से काल सर्प दोष दूर होता है और सुख समृद्धि आती है। नाग पंचमी के दिन भगवान शिव की पूजा और रुद्राभिषेक करते है, महामृत्युंजय मंत्र का जाप भी करना चाहिए।

हमारी संस्कृति हमें पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, वनस्पति सबके साथ में आत्मीय सम्बन्ध जोड़ना सिखाती है। **जैसे बछ बारस पर हम गाय-बछड़े की पूजा करते है, पोळा और वृषभोत्सव के दिन बैल का पूजन, वट-सावित्री व्रत में बरगद की पूजा, ऋषि पंचमी पर तृण की तो कही कोयल की पूजा करते है जिसे कोकिला-व्रत कहा जाता है जिसमे कोयल के दर्शन हो अथवा उसका स्वर सुनाई दे तब ही भोजन ग्रहण किया जाता है। उसी प्रकार से नाग पंचमी के दिन नागों की पूजा करते है।** आख़िरकार भगवान शिव ने उन्हें अपने गले में जो धारण किया है। नाग खेतों का रक्षण भी करते है, इसलिए उन्हें **"क्षेत्रपाल"** कहते हैं।

जानें कैसे हुई नाग पंचमी की शुरुआत?

पौराणिक कथाओं के अनुसार, अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित जो द्वापर युग के अंतिम राजा थे। वह अपनी प्रजा के हित के लिए अनेक यज्ञ अनुष्ठान किया करते थे। एक श्राप के कारण तक्षक नामक सर्प ने इन्हें मार डाला था। तक्षक नाग ने श्रृंगी ऋषि का श्राप पूरा करने के लिये राजा परीक्षित को काटा था। इससे क्रोधित होकर राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने पृथ्वी से इनके समूल नाश के लिए उन्होंने नाग यज्ञ आरम्भ किया और उसमें सांपों की आहुति देनी शुरू की थी। तब नाग भागते हुए ब्रह्मा जी के पास गए, ब्रह्मा जी ने श्रावण मास की शुक्ल पंचमी को ही नागों को वरदान दिया कि तपस्वी जरत्कारु नाम के ऋषि का पुत्र आस्तिक नागों की रक्षा करेंगे।

नागों के समूल नाश के लिए यज्ञ में उनकी आहुति के दौरान जब परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने इंद्र सहित तक्षक को अग्निकुंड में आहुति के लिए मंत्र पाठ किया, तब आस्तिक ने तक्षक के प्राण की रक्षा की। जिस दिन नागों के अस्तित्व की रक्षा हुई

वह तिथि पंचमी थी और तभी से नाग पंचमी के दिन नाग देवता की पूजा का प्रचलन शुरू हुआ।

नागों में शेषनाग सबसे बड़े और तक्षक दूसरे स्थान पर है, वे दोनों भाई हैं। जब शेषनाग भगवान विष्णु की शरण में गए तब नागलोक से जाते जाते छोटे भाई तक्षक का राजतिलक किया तथा उन्हें नागराज के पद पर अभिषिक्त किया।

नागपंचमी के दिन क्या करें -

- इस दिन नागदेव का दर्शन अवश्य करना चाहिए।
- बांबी (नागदेव का निवास स्थान) की पूजा करना चाहिए।
- नागदेव की सुगंधित पुष्प व चंदन से ही पूजा करनी चाहिए क्योंकि नागदेव को सुगंध प्रिय है।
- **"ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा"** मंत्र का जाप करें।

- नाग देव की महिमा -

"गले में शिव शंभू के विराजे नाग,
अपने फन पर रखे हैं पृथ्वी का पूरा भाग,
ऐसे हैं शक्तिशाली देवता हमारे नाग,
इनके आगे नतमस्तक हमारे हाथ।"

.....

आदि पॅरुक्कु पर्व / तमिलनाडु का मानसुन त्यौहार जानने के लिए आइकन को स्पर्श करें -

दोस्ती

दोस्ती का एक अलग ही जज्बात और एहसास होता है।
दोस्ती हम सबको विश्वास और सामंजस्य की सौगात देती है।
दोस्ती निभाने के लिए जीवन में,
भावनात्मक, सामाजिक और व्यावहारिक होना जरूरी है।

व्यक्तित्व और गुणों को परख कर दोस्ती की जाए तो
जीवन भर दोस्ती कायम रहती है।
दोस्ती एहसास नही, कोई खास चीज होती है।
यह कोई भीख नहीं, कुदरत की देन होती है।
बहुत खुशनसीब होते हैं वो, जिन्हें दोस्ती नसीब होती है।

लाख टूटे न मिले, वो अपनी तकदीर होती है।
ऐसे भी क्या लोग हैं, जिनकी सबसे दूरी होती है।
ना मिले दोस्त जिसे, उसकी जिंदगी अधूरी सी होती है।

जैसे एक फूल बाग सजा देता है, वैसे ही
एक दोस्त जिंदगी संवार देता है।
बचपन से ही बच्चों को दोस्ती के माहौल मिले तो
जीवन के अंतिम पडाव तक एक सच्चा दोस्त साबित होता है।

"दोस्तों का प्यार किसी दुआ से कम नहीं होता है,
उम्र भर साथ निभाने का नाम ही दोस्ती होता है।"

- आशा शर्मा जी, पुणे (महाराष्ट्र)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

Google Location QR Code:
WHITE BERRY
RESIDENCY
LUXURIOUS
1 & 2 BHK & Jodi Flat
(1+2 & 2+2)
Possession
December 2022
www.whiteberryresidency.com
Book Now
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai

www.kingsweds queens.com
GAATHBANDHAN
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

रक्षाबंधन
का त्यौहार

दोस्तों हम सभी को ये जानने की उत्सुकता रहती है, कि कोई त्योहार क्यों मनाया जाता है, तो उसके पीछे का क्या कारण होगा और वो अभी तक क्यों फॉलो किया जाता है। जैसे राखी का त्योहार ही ले लो –

भाई और बहन का अटूट रिश्ता सबको याद है वो खट्टी - मीठी नोक झोंक, वो लड़ना, साथ में मस्ती करना, रात को चोरी करके खाना, भाई जब बहन की चोटी खींचता है तो बहन का माँ से बोलना समझा लो आपके लाडले को तो वो भाई का प्यार वाली चपत लगाना, भाई का पापा को बोलना कि आप इसको कुछ नही बोलते आपके लाड प्यार ने बिगाड़ दिया इसको। ये सारी यादे आज भी सबके जहन में हैं, और नहीं तो हमने याद दिला ही दिया।

ये तो हुई आज के समय की यादें और इसके लिए भाई और बहन का ये अटूट रिश्ता सदियों से चला आ रहा है।

राखी के त्योहार को लेकर अपनी बहुत सारी कथाये सुनी होंगी, **भगवान कृष्ण और द्रोपदी की, इन्द्र देव, लक्ष्मी माँ और राजा बलि की, इतिहास में भी सिकंदर और राजा पुरु, रानी कर्णावती और सम्राट हुमायु** और भी बहुत सारी, सभी कथाओं का अपना-अपना महत्व भी है। इन सभी कथाओं का सार यही निकल कर आता है, कि जीवन में जब भी मुसीबत या विपदा की घड़ी आयी तो जिन लोगो ने रक्षा सूत्र बंधवाया उन सभी ने जरूरत आने पर रक्षा करके अपने वचन को निभाया है, और रक्षासूत्र को परिभाषित किया जैसे भगवान श्री कृष्ण ने भी द्रोपदी की रक्षा की और हर कदम पर साथ निभाया।

दोस्तों सबसे बड़ी बात यही है कि **रक्षाबंधन सिर्फ एक धागा ही नहीं है बल्कि रक्षा का सूत्र है जो विश्वास के साथ बांधा जाता है। हमारी भारतीय परंपरा में राखी के धागे को लोहे से भी मजबूत माना गया है जो की आपस में प्यार और विश्वास की परिधि में भाइयों और बहनों को दृढ़ता से बांधे रखता है।**

एक रोचक तथ्य और है जो कि वैदिक काल से लेकर आज तक चला आ रहा है - इस परंपरा की शुरुआत **देवासुर संग्राम से हुई थी, जिसमें ब्राह्मणों/पुरोहितों यजमानों (राजा और समाज के वरिष्ठ जनों) को श्रावण पूर्णिमा के दिन रक्षा सूत्र बांधा करते थे।** इसके लिए यजमान धर्म और यज्ञ की रक्षा का वादा करते थे।

आइए जानते है भारत में इस त्योहार को किस नाम से जाना जाता है और कैसे मनाया जाता है –

- पश्चिम भारत - यहाँ पर राखी पूर्णिमा को **नारियल पूर्णिमा** भी कहा जाता है, जिसमे नारियल को समुद्र में विसर्जित किया जाता है मतलब कि वरुण देव (जो की समुद्र देव है) को नारियल अर्पण किया जाता है।

- दक्षिण भारत - यहाँ पर रक्षाबंधन को **अवनी अबितम** भी कहा जाता है। यह ब्राह्मणों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है इस दिन मंत्रो उच्चारण के साथ ब्राह्मण अपने जनेऊ बदलते है, इस पूजा को **श्रावणी या तर्पण पूजा** भी कहा जाता है।

- उत्तर भारत - यहाँ पर रक्षाबंधन को **कजरी पूर्णिमा** भी कहते है, इस दिन अच्छी फसल के लिए माँ भगवती की पूजा की जाती है।

- ये दिन भाई और बहनों के अलावा **किसानों, मछुआरो और समुद्री व्यापारियों के लिए भी शुभ माना जाता है** क्योंकि वो आज से अपने नए काम की शुरुआत करते है।

"सभी भाई-बहनों को रक्षाबंधन की हार्दिक शुभकामनायें। **अरे सिर्फ भाई बहन ही क्यों, दो भाई दो बहने मिलकर भी ये त्योहार मना सकते है। आज के समय में आप दोनों एक दूसरे की रक्षा का वादा करें और दोनों एक दूसरे को राखी बांध कर खुशियां मनाये।**"

दोस्तों अब आपको रक्षाबंधन के त्योहार का महत्व समझ में आ गया होगा, आप सभी को रक्षा बंधन की ढेर सारी शुभकामनायें।

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर 7303021123 को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

संस्कृति का उद्गम- संस्कृत दिवस

आर्यावर्त की भूमि कोई साधारण भूमि नहीं है यह वह भूमि है जहाँ उदारता और कृतज्ञता का भाव सदैव विधमान रहता है। साथ ही बात जब संस्कृति और सभ्यता की चले तब यह देश समूचे विश्व में शिरमौर है।

कारण यह है कि संस्कार की आधारशिला पर ही इस देश की नींव रखी है। यहाँ जितना स्नेह अपने देश की मिट्टी से किया जाता है उतना ही स्नेह ईश्वर द्वारा प्रदत्त हर एक वस्तु से - जिस प्रकार नदियों का बहना, झरनों का फूटना, फूलों का खिलना स्वतः ही आनंदकारी घटना है ठीक उसी प्रकार भाषा का बोलना, भाषा का लिखना, भाषा का पढ़ना अपने आप में आनंद को महसूस करना है। उसी आनंदित पल को जब सहर्ष रूप से राज्य में, राष्ट्र में, विश्व में स्वीकार कर लिया जाता है तब वह दिवस बन जाता है जिसे हम हिंदी दिवस, संस्कृत दिवस इत्यादि रूप से जानते हैं। **संस्कृत का होना ही अपने आप मे संस्कार का होना है क्योंकि संस्कृत का शाब्दिक अर्थ भी है- परिष्कृत।**

श्रावण पूर्णिमा के विशेष अवसर पर हम संस्कृत दिवस मनाते हैं इस दिवस के दिन अध्ययन आरंभ किया जाता है, इसी दिन ही ऋषि यज्ञोपवीत संस्कार धारण करते हैं। चूंकि यह पवित्रता का पर्याय है इसीलिए इसका विधान भी पवित्र और धार्मिक है।

संस्कृत देववाणी हैं, सभी भाषाओं की जननी है। हमारे सभी वेद संस्कृत में लिपिबद्ध हैं। यह भाषा नहीं है बल्कि एक माँ हैं, जब इसे बोल रहे होते हैं लगता है मानो हम संगीत गायन कर रहे हो कोई राग छेड़ रहे हों, सुनते हैं तब लगता है मानो जैसे मां ने कोई लोरी सुनाई हो, नवल प्रभात की आरती हुई हो। इस भाषा का अलग ही रोमांच है। यह वह धारा है जिसकी अजस्त्र धाराएं फूटकर विभिन्न विभिन्न जगहों पर भिन्न भिन्न रूपों में जन समुदाय को आनंदित कर रही हैं।

गर्व कीजिए अपने सनातनी और संस्कारी होने पर कि हमने विरासत में ऐसी धरोहर प्राप्त हुई है अब हमारी नैतिक जिम्मेदारी है कि हम इस परंपरा का निरंतर विकास करें यही असली कृतज्ञता होगी।

- डॉ. किशोर कुमार शर्मा जी, धौलपुर, (राजस्थान)

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
संगीता जी दरक का धन्यवाद

अब तो बनो इंसान

बन चुके तुम
जालिम, सितमगर और शैतान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
दुराचारी, बलात्कारी और हैवान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
ठगबाज, धोखेबाज और बेईमान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
बाबा, गुरू और महान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
मूर्ख, नासमझ और नादान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
चतुर, चालाक और बुद्धिमान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
नेता, दाता और धनवान,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

बन चुके तुम
बहुत कुछ बन चुके तुम,
अब तो बनो इंसान ।
अब तो बनो इंसान ।

- रविचाँद हाँसदा जी, मसलिया, दुमका, (झारखंड)

क्या गवायां है आज

हर करम अपना करेंगे ए वतन तेरे लिए
कहने वाली वह आवाज जो शांत हो गई हैं
भर गई है हर हिंदुस्तानी की आंख में पानी
ये वही हैं जो शहीदों के लिए अपनी आंख में
भरती थी पानी
अपनी आवाज से दर्द भी उभारा और भक्ति भी
प्यार के अविरत पलों को भी गया
कोकिल कंठी देश की कोकिला
चली गई हैं आज
कैसे भरेगी वो जगह पता नहीं
लेकिन भूलेंगे लता जी को कोई नहीं
दासियों सालों तक हर शे में गूंजी आवाज उसकी
आज जो हुई हैं खामोश
रुलाया था नेहरू जी को गा कर शान–ए–वतन के गीत
गाती रही गाती जा रही थी अविरत
थम गई वो ही आवाज आज
कौन गायेगा अब **'मेरे वतन के लोगों'**
याद करवाती थी उनको जिन्होंने ने सरहद पर जान गवाई
वही छोड़ गईं गानों और यादों के गुलदस्तों को
एक स्वर से भरपूर युग की समाप्ति
को कोटि कोटि प्रणाम ।।

"स्वर कोकिला को समर्पित"

– **जयश्री बिरमी जी, अहमदाबाद, (गुजरात)**

अभिनंदन वीर शहिदों का

अपने बदन का लहू बहाकर, देश को कराया आजाद,
उन अंग्रेजों को भगाया, जो वर्षों देश को किए बरबाद।
शत-शत वंदन-अभिनंदन करता हूँ, ऐसे वीर शहीदों का,
जिनके दम पर आज हिंदुस्तान, खुशहाल व आबाद।।

ऐसे देशभक्तों को शौर्य गाथाएं सुनकर, आंखें हो नम,
जिन्होंने देश को सर्वोपरि माना, परिवार का न था गम।
पूज्यनीय हैं ऐसे वीर शहीद, राष्ट्र के लिए हुए बलिदान,
उनके लिए धन-दौलत तुच्छ था, देश था सबसे अहम।।

वीर सुभाष चंद्र, भगत सिंह व आजाद जैसे नौजवान,
सर कटाएं अनगिनत वीर, जिनका न कहीं नामोंनिशान।
ऐसे बेनाम रणबांकुरों के श्रद्धा में, शीश झुकता है सदैव,
जिनके क्रांति के बदौलत, स्वतंत्र हुआ हमारा हिंदुस्तान।।

सत्य अहिंसा सत्याग्रह का, गांधी जी के अचूक प्रयोग,
भारत के आम-आवाम ने, बापू का किया पूरा सहयोग।
नेहरू, पटेल, तिलक जैसे, देश में जन्में अनेकों महापुरुष,
देश में ऐसी अलख जगी, आजादी का बन गया योग।।

ऐसे आजादी के दीवानों का, न कोई जात, न ही धर्म,
सब भारत के देशभक्त थे, स्वतंत्रता लाना उनका कर्म।
देश को गुलामी से मुक्त कराने, वंदे मातरम का नारा,
पूरा राष्ट्र एकजुट हुआ, अंग्रेज न समझ सके ये मर्म।।

-लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी, कैतहा, भवानीपुर, बस्ती (उ. प्र.)

हम अनेक में एक

धन्य धन्य है भारतवासी धन्य धन्य है देश
धन्य धन्य संस्कृति अपनी धन्य धन्य परिवेश
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का मंत्र सदा अपनाया
जब भी संकट आया मिलकर साथ निभाया
ये ही रही पहचान हमारी हम अनेक में एक
सदियों की इस परंपरा को, विश्व रहा है देख
सृष्टि के हर जीव की चिंता सदा रही है सताई
तब जाकर भारत माता **'विश्व-गुरु'** कहलाई
एकजुटता सबकी बनी रहे सद् बुद्धि दे सहारा
अंदर बाहर के शत्रु कोई क्या कर लेंगे हमारा

- व्यग्र पाण्डे जी, गंगापुर सिटी (राजस्थान)

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

कजली तीज पूजा

कजली तीज हमारी भारतीय संस्कृति का एक परंपरागत लोक पर्व है। इस **कजली तीज को बड़ी तीज, बूढी तीज तथा सातुड़ी तीज** के नाम से जाना जाता है। यह व्रत विशेषकर सुहागिन महिलाओं का होता है, कुमारी कन्याओं तथा युवतियों के लिए यह हर्ष-उल्लास एवं खुशी का पर्व है।

हाथों में मेहंदी लगाना, 16 श्रृंगार करना, विशेषकर इस दिन ज्यादातर पहनी जाती लहरिया की साड़ी, हल्की-हल्की फुहारे, सखियों संग झूले का झूलना तथा कजरी गीत गाना अपने आप में ही एक सुखद अनुभूति है।

कजली तीज भादो की कृष्ण पक्ष की तीज को मनाई जाती है। जिस प्रकार से हरियाली तीज या हरितालिका तीज, अक्षय तृतीया का अपना महत्त्व है वैसे ही कजली तीज का अपना एक विशेष महत्व। कजली तीज के दिन मां पार्वती की पूजा एवं अर्चना सौभाग्यवती बहनों के द्वारा की जाती है।

यह विशेष पूजा अपने पति की लंबी आयु के लिए की जाती है कुंवारी कन्याएं अच्छा वर प्राप्त करने के लिए कजली तीज का व्रत करती हैं। कजली तीज अधिकतर उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार में विशेषकर मनाया जाता।

महत्व –
भीषण गर्मी की तपन के बाद मानसून का स्वागत करने हेतु कजरी तीज मनाई जाती है। इसका इसलिए भी महत्व क्योंकि सौभाग्यवती महिलाएं पार्वती जी का सम्मान करने के लिए यह व्रत करती हैं तथा चंद्र दर्शन के बाद व्रत खोलते हैं।

विधि –
कजरी तीज को मां पार्वती के पूजन के साथ गाय की पूजा भी की जाती है तथा नीम की पूजा भी होती है। पर्यावरण तथा प्रकृति और पशु पक्षियों से जुडाव जो हमारी संस्कृति की विशेषता है, कजरी तीज इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।

किवदंती है कि 108 बार पार्वती जी ने जन्म लिया उसके बाद शंकर जी से शादी करने में सफल हुई थी। यह तीज निस्वार्थ प्रेम के सम्मान के रूप में मनाया जाता है, पार्वती जी की भक्ति निस्वार्थ भक्ति थी।

इस दिन जौ, चने, चावल, गेहूँ के सत्तू बनाए जाते हैं और उसमें घी और मेवा मिलाकर विविध प्रकार के व्यंजन बनाकर पार्वती जी का प्रसाद लगाया जाता है।

क्यो मनाई जाती है तीज?

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार कजली मध्य भारत में स्थित एक जंगल का नाम था, वहां के लोग अपने निवास स्थान अर्थात जहां वह रहते थे उसको प्रसिद्ध करने के लिए जो गाने गाते थे उसे **'कजरी'** कहते थे। क्षेत्र के राजा दादू राई थे उनकी मृत्यु के बाद उनकी रानी नागमती, सती प्रथा को मानते हुए सती हो गई तो वहां के लोग इस दुख में रानी नागमती को सम्मानित करने के लिए **'राग कजरी'** मनाना शुरू कर दिया।

इसके अतिरिक्त देवी पार्वती को सम्मानित करने के लिए पूजा की जाती है यह पति के लिए पत्नी की भक्ति समर्पण तथा निस्वार्थ प्रेम को दर्शाती है।

मेला कजली का –

राजस्थान के बूंदी में तीज का मेला लगता है। जयपुर में पहले तीज की सवारी निकलती थी। कहा जाता है बूंदी के राजा तीज के दिन निकलने वाली सवारी में से तीज माता को जीत कर ले आए तथा तबसे सवारी तथा मेला **'गोठड़ा - बूंदी रियासत'** में निकालने लगे।

यह सवारी शान शौकत का प्रतीक थी 21 तोपों की सलामी होती थी तथा दो दिवसीय सांस्कृतिक कार्यक्रम होते थे। सवारी की परंपरा अभी भी है लेकिन सवारी राज महल के अंदर ही निकलती है। अब नगर परिषद द्वारा तीज माता की सवारी जनता के दर्शनार्थ निकाली जाती है।

व्रतकथा –

एक गांव में एक गरीब ब्राह्मण रहता था उसकी पत्नी ने भादो की कृष्ण पक्ष तीज को व्रत रखा। तथा व्रत की पूजा हेतु सत्तू लाने का आग्रह किया। ब्राह्मण देवता के पास पैसे नहीं थे उन्होंने सोचा तीज माता की पूजा अधूरी रह जाएगी इसलिए बनिए की दुकान में घुस गए तथा वहां से तौल कर सवा सेर सत्तू बनाने के लिए चने की दाल घी शक्कर लेकर सत्तू बना लिया तथा लेकर जा नहीं लगा तभी आवाज सुनकर बनिया जाग गया और उन्होंने उसे रंगे हाथों पकड़ लिया ब्राह्मण देवता ने पूरी कहानी बनिया को बताई। बनिया तीज माता की पूजा के प्रति श्रद्धा से भर गया और उसने ब्राह्मण देवता को जाने दिया तथा ब्राह्मणी को अपनी बहन मान लिया ब्राह्मण देवता सुख से रहने लगे।

जैसे उस ब्राह्मण देवता के दिन फिर वैसे ही सभी के दिन फिरे तीज माता हमें सुख शांति दें तथा प्रसाद लगाकर चंद्र दर्शन कर व्रत तोड़ती हैं ।

- उषा जी चतुर्वेदी एडवोकेट, भोपाल (म. प्र.)

कजली तीज पूजा की विधि और कथा

नीम की डाली / टहनी से तीज की पूजा क्यों करते हैं?

- नीमडी माता की कथा
- तीज माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

- तीज की पूजा कैसे करते हैं?
- संकल्प कैसे लेते हैं?
- चाँद को अरख कैसे देते हैं?

- चौथ माता की कथा
- छींक चौथ माता की कथा
- गणेश जी की कथा
- लपसी तपसी की कथा

जीवन एक संसार

किसी ने पूछा इस दुनिया
में आपका कौन है?
मैने हँसकर कहा
समय
अगर वो सही, तो सभी
अपने वरना कोई नही !!

बाजीगर
वो होता है जो
बार-बार हारने के
बाद एक और बार
प्रयास करता है !!!

'धर्म'
कोई भी हो
बस
कर्म
अच्छे होने चाहिए !!!

भरोसा और आर्शीवाद
कभी दिखाई नहीं
देता है..
परन्तु असम्भव को
भी सम्भव बना
देता है !!!

खुद से बोलिए
मैं खुश हूँ, स्वस्थ हूँ..
मेरा जीवन खुशियों से
भरा है और मैं उसे पूरे
आनंद के साथ जी
रहा हूँ !!!

किसी की फितरत को
बदल नहीं सकते है...
प्याज को प्यार
से काटो तो भी
आंसू निकलते है..!!

उपछठ एवं बलराम जंयती

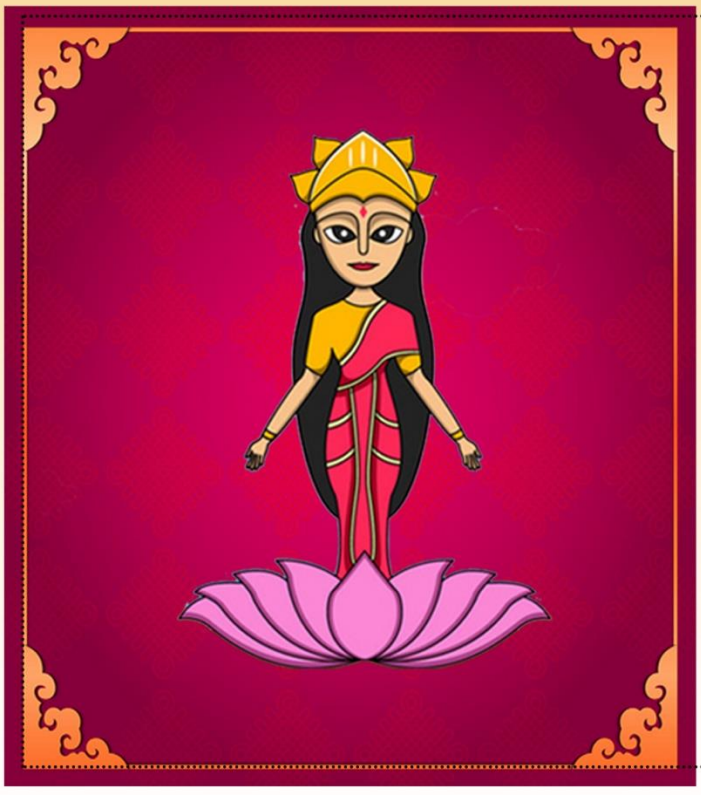

एक ऐसा व्रत जो खडे रहकर होता हैं ?

उपछठ का व्रत

उपछठ का व्रत होता है जो भादवा माह में कृष्ण पक्ष की छठ यानि षष्ठी तिथि को किया जाता है। सायंकाल के समय स्नान करने के बाद तैयार होकर खड़े रहते है जब तक की चन्द्रमा को अरख ना दे देवे। इस बीच मंदिरों के दर्शन को जाते है। चाँद को अरख देने के बाद भोजन ग्रहण किया जाता है।

उपछठ व्रत कथा के लिए आइकन को स्पर्श करें

बलराम जन्म दिवस की हार्दिक बधाई

इस दिन द्वापर युग में भगवान श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम का जन्म हुआ था। जिन्हे शेषनाग का अवतार भी माना जाता है। बलराम जी का शस्त्र हल और मूसल है इसीलिए इन्हें **"हलधर"** भी कहा जाता है, साथ ही **"संकर्षण, हलायुध, रोहिणीनन्दन, काम और नीलाम्बर"** आदि नामों से भी जाना जाता है। भारत देश कृषि प्रधान देश है और हल कृषि के लिए प्राणतत्व है इसलिए बलराम जन्मोत्सव पर हल की पूजा करने का विधान है। बलराम जन्मदिवस को **"हल षष्ठी, चन्दन षष्ठी और चंद्र छठ"** के नाम से भी जाना जाता है।

हंसी-खुशी के पल

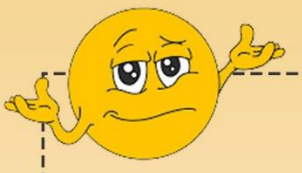

भीड में सिर्फ सर
होते है...

अगर दिमाग होते तो
भीड ही ना होती !!!

हर बारिश में यही रजा है
कि बारिश की जितनी बूँदे
जमीन पर गिरे, उतनी बार
आप स्लीप हो पडे...

.

.

खुशियों के समंदर में !!!

पप्पू - यार राजू ये
शादी के जोडे कौन बनाता है?
राजू - भगवान बनाता है।
पप्पू - ओ तेरी...

.

.

मैं तो दर्जी को दे आया !!!

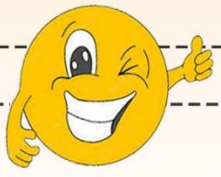

ICC
से अनुरोध है कि
वर्ल्डकप मेरे गांव राजस्थान
में मेरे खेत में करवा ले...
वहां बारिश तो दूर
हवा भी लग जाए
तो बताना !!!

दोस्तो हम उन्हे मुड-मुड कर
देखते रहे और वो हमे
वो हमे और हम उन्हे..
क्योकि परीक्षा में न
हमे कुछ आता था
और न उन्हे !!!

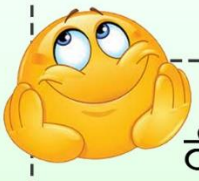

टीचर बच्चे से - होमवर्क
क्यों नहीं किया?
बच्चा - मैम जब पढने बैठा तो
लाइट चली गयी थी।
टीचर - तो लाइट आने के बाद
कर लेते?
बच्चा - मैने इस डर से नही
किया कि फिर से न लाइट
चली जाये !!!

कृष्ण जन्माष्टमी

भाद्रपद मास की कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को मनाया जाने वाला यह त्योहार बहुत ही विशेष है। हिंदू मान्यताओं के अनुसार **भगवान विष्णु का अवतार माने जाने वाले भगवान श्री कृष्ण ने देवकी के आठवें पुत्र के रूप में कारागृह में मध्यरात्रि को जन्म लिया था।** तभी से इस दिन को भारत और दुनिया के बाकी जगहों में भी बड़े ही भक्ति भाव और धूमधाम से मनाया जाता है।

मथुरा नरेश कंस अपनी छोटी बहन देवकी से बहुत स्नेह करते थे। कंस ने देवकी की शादी वसुदेव जो की कंस के परम मित्र थे उन्हीं से कर दी और वह खुद सारथी बनकर देवकी वसुदेव को रथ में बिठा कर विदा कर रहे थे, तभी आकाशवाणी हुई कि देवकी की आठवीं संतान उसका काल बनेगी।

यह सुनते ही कंस अपना आपा खो बैठते हैं और देवकी वसुदेव को कारागार में डाल देते हैं। एक-एक करके वह माता देवकी के छह पुत्रों को मार डालते हैं। **सातवीं संतान बलराम जो कि शेषनाग का अवतार माने जाते है, भगवान विष्णु की कृपा से वसुदेव की बृजवासी पत्नी रोहिणी के गर्भ से जन्म लेते हैं और आठवीं संतान के रूप में भगवान विष्णु के अवतार श्री कृष्ण का जन्म होता है।**

भगवान श्री कृष्ण के जन्म लेते हैं माया के प्रभाव से कारागृह के सभी सिपाही सो जाते हैं। जेल के दरवाजे अपने आप खुल जाते हैं। तब वसुदेव जी श्री कृष्ण को टोकरी में रखकर, अपने सिर पर उठाकर ब्रज में नंद बाबा के घर पहुंचाने को निकलते हैं। बाहर कड़कड़ाती बिजली, धुआंधार बारिश, रास्ते में जमुना जी अपने उफान पर बहती रहती है। कहते हैं कि ऐसे में शेषनाग उनकी छत बनते हैं और जैसे ही जमुना जी को श्री कृष्ण के चरण स्पर्श होता है जमुना जी दो भागों में बंट जाती हैं और वसुदेव जी को जाने का रास्ता मिल जाता है। वहां वह चुपचाप श्री कृष्णा को मैया यशोदा के पास रखते हैं और माया जो बेटी रूप में जन्मी थी उसे ले आते हैं। ताकि कंस को शक ना हो।

इधर ब्रज में बरसों बाद यशोदा और नंद बाबा के घर पुत्र जन्म से सभी ब्रजवासी बहुत आनंदित होते हैं और कृष्ण जन्म को एक बड़े उत्सव के, त्योहार के रूप में मनाते हैं। तभी से पूरे भारत में और दुनिया भर में भी कई जगहों पर कृष्ण जन्माष्टमी मनाई जाती हैं।

भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सभी लोग सुबह से उपवास करते हैं हर घर के पूजा घर को बहुत सुंदरता से सजाया जाता है। महिलाएं भजन-कीर्तन करती हैं। मंदिरों को भी उत्सव के लिए तैयार किया जाता है। सुंदर सजावट की जाती है। **मध्य रात्रि 12:00 बजे श्री कृष्ण की मूर्ति का पंचामृत से अभिषेक करके, उनको सुंदर वस्त्र पहनाए जाते हैं और पालने में विराजमान करा कर आरती की जाती हैं। विशेषकर माखन मिश्री और पंजरी का भोग लगाया जाता है।** उसके बाद भोजन करके सभी भक्त अपना दिन भर का व्रत खोलते है। घर परिवार की सुख-शांति, संतान प्राप्ति, आयु और समृद्धि के लिए जन्माष्टमी पर्व का विशेष महत्व है।

मथुरा श्री कृष्ण की जन्मभूमि होने की वजह से यहाँ जन्माष्टमी विशेष रूप से और भक्ति भाव से मनाई जाती हैं। वैष्णवों में जन्माष्टमी का महत्व बहुत ज्यादा है। वह लगभग एक महीना पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं और हर रोज जन्माष्टमी की बधाई गाते हैं।

जन्माष्टमी का त्योहार एक नहीं बल्कि 2 दिन का होता है। दूसरे दिन नंदोत्सव या दही हांडी के रूप में बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है।

"हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की ।
नन्द घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की" ।।

- योगिता सदानी जी, पुणे (महाराष्ट्र)

.....

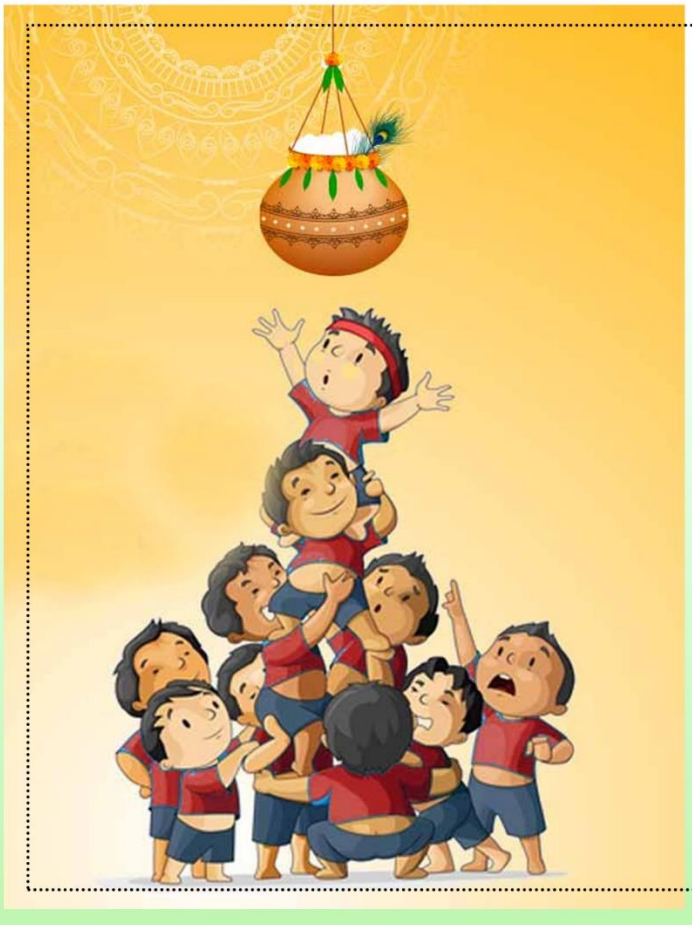

दही हांडी महोत्सव

कृष्ण जन्माष्टमी या गोकुलाष्टमी के एक दिन बाद भाद्रपद की नवमीं को दही हांडी का पर्व बहुत हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस पर्व में एक मिट्टी की हांड़ी (मटकी) में दही-माखन, दूध, फूल और पानी भर के ऊंचाई पर लटका देते है और फिर एक मानव पिरामिड बनाकर उस हांड़ी को फोड़ते है। यह लीला उसी प्रकार घटित होती है जिस तरह बाल गोपाल बचपन में दही-माखन चुराते थे। महाराष्ट्र में इसकी रौनक सबसे अधिक देखने को मिलती है।

दही हांडी पर्व कैसे मनाया जाता है?
जानने के लिए आइकन को स्पर्श करें - www.

पर्युषण पर्व

पर्युषण पर्व जैन समाज का पर्व है, जिसका मुख्य उद्देश्य आत्मा की शुद्धि और धर्म की आराधना करना है। इसका **शाब्दिक अर्थ- परि+उषण है, परि यानी चारों तरफ से और उष्ण का मतलब बुरे कर्मो / विचारों का नाश करना है।**

बछ बारस

भादवा महीने में कृष्ण पक्ष की बारस (द्वादशी) को बछ बारस के रूप में मनाया जाता है। जिसे **"वत्स द्वादशी"** भी कहते है। इस दिन गाय का दूध और दूध से बने पदार्थ जैसे दही, मक्खन, घी आदि का उपयोग नहीं किया जाता। इस के अलावा गेहूँ तथा उससे बनी चीजें भी नहीं खाते है।

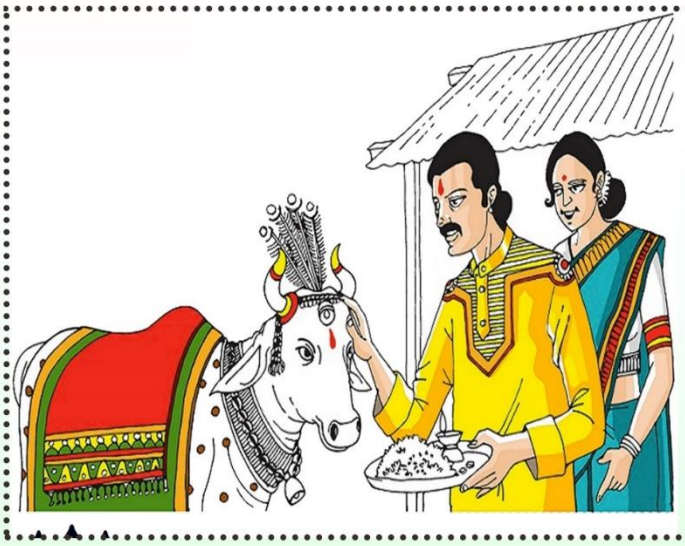

पोळा-पिठोरा

यह एक मराठी त्योहार है जो बैलों के प्रति कृतज्ञता एवं आभार प्रकट करने हेतु मनाते है। पोळा-बैल पोला श्रावण अमावस्या को मनाया जाने वाला त्योहार है। कई जगह पर यह त्योहार दो दिन मनाते है। पहले दिन को **'बड़ा पोला'** और दूसरे दिन को **'तान्हा पोला'** यानी बच्चों का पोळा कहते है।

नागपुर का मारबत

नागपुर शहर में पोळा के दिन दो मारबत निकलती है। मारबत एक देवी का रूप है जो बुरी ताकतों और बीमारियों से स्थानीय लोगों का बचाव करती है। काली मारबत भीषण व भयानक होती है और पीली मारबत देवी स्वरूप होती है।

पारंपरिक व्यंजन- भुट्टा पुंडिग

सामग्री- आधा कप भुट्टे के दाने, 1 लीटर दूध, 150ग्राम चीनी, बादाम, काजू, किशमिश, चेरी इलायची पाउडर, सभी आवश्यकतानुसार।

विधि- भुट्टे के दाने को 15 से 20 मिनट के लिए पानी में भिगोकर रख दें, फिर उसे थोड़े से पानी के साथ मिक्सर में महीन पेस्ट बना लें। एक नॉन स्टिक कढ़ाई में 2 से 3 चम्मच घी गर्म करके उसमें यह पेस्ट को हल्के आज पर भुने फिर दूध मिलाएं और लगातार हिलाते हुए अच्छे से पकाये। पुडिंग को गाढ़ा करें फिर चीनी मिलाएं। आंच से उतर कर उसमें मनपसंद मेवा डालें और ठंडा करें। इसे फ्रीज में 2 से 3 घंटे के लिए रख दें। एक कांच के बाउल में यह पुडिंग डालें। ऊपर से थोड़ी सी क्रीम डालें और मनपसंद मेवा, चेरी आदि से सजाकर ठंडा ठंडा पुडींग राखी पर सबको पेश करें।

.....

रसोई युक्तियाँ -

१) मकई की रोटी बेलते समय मुश्किल हो रही हो तो लोई को पॉलिथीन में रखकर बेलने से आसानी से बेल सकते है।

२) दाल फ्राई को अधिक गाढ़ा करने के लिए एक कप उबली दाल को मिक्सी में पीस ले और बाकी दाल मिला ले, दाल गाढ़ी हो जायेगी।

३) कस्टर्ड को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए चीनी के साथ एक चम्मच शहद मिला दे।

४) यदि आप घर पर पनीर बना रहे हो और घर पर नींबू ना होने पर उबलते दूध में दही डालकर फाडने से भी पनीर अच्छा बन जाएगा।

.....

घरेलू नुस्खे -

१) खांसी जुकाम हमेशा ही बना रहता है तो रोज खाली पेट गर्म पानी पीने की आदत डालें।

२) अदरक के रस में शहद मिलाकर चाटने से खांसी ठीक हो जाती है।

३) सर्दी जुकाम के कारण सिर दर्द हो जाने पर दोनों कानों में हरे धनिए का रस की कुछ बूंदें डालने से आराम मिलता है।

४) बारिक प्याज काट कर उसमें एक चम्मच चीनी मिला दे, अपनी रूचि के अनुसार आप अदरक रस भी मिला सकते हैं। रात को रख देऔर सुबह करें। इससे खांसी में काफी राहत मिलेगी।

विविधा कुकिंग क्लासेज, पूनम राठी जी, नागपुर (महाराष्ट्र)

लघुकथा - दोस्त

पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा, देखते ही देखते भूमि के अगल बगल में ऑटोग्राफ लेने वालों का ताता लग गया आज तो उसका यह पहला ही शो था, और पहले ही प्रोग्राम में उसे इतनी सफलता मिल जायेगी इसकी तो उसे दूर दूर तक उम्मीद नहीं थी। उसकी आवाज में गजब का जादू देख बहुत से लोग आगे के प्रोग्राम हेतु उससे बुकिंग करवाना चाह रहे थें उसे तो अधिक इस तरह के आयोजनों की जानकारी तक नहीं थी, कितनी धन राशि लेनी चाहिए यह भी नहीं पता था, इसलिए वह केवल फोन पर संपर्क करे इतना कहते हुए आगे बढ़ रही थी। भीड़ में भूमि की नजरे हर्ष को ढूंढ रही थी इस सफलता के पीछे सबसे बड़ा योगदान तो हर्ष का रहा है वह सबसे पहले उसे शुक्रिया अदा करना चाहती थी, पर वह कहीं नजर नहीं आया तो वह भीड़ को लांघते हुए तेज कदमों से बाहर निकल पड़ी।

कार पार्किंग के पास निशीगंधा के फुलों का बड़ा सा गुलदस्ता लिए हर्ष उसके स्वागत में खड़ा था। **"गुलदस्ता दे हर्ष कार का गेट खोलते हुए उसे कहने लगा, महान सेलिब्रिटी जी बैठिए इस पर वह खिलखिलाने लगी खुशी से उसकी ऑखों से ऑसू लुढक गालो पर आ गये हर्ष उन्हें पोंछते हुए कहने लगा भूमि अब तुम्हारे जीवन को नई दिशा मिल चुकी हैं तुम्हें बहुत आगे बढ़ना है।"**

भूमि तीन बहनों में सबसे बड़ी थी किन्तु उसका रंग गहरा सांवला होने से उसे कितने ही लड़के देखने आते और नापसंद कर चले जाते आये दिन इस से घर में चिक-चिक होते रहती माता पिता भी इस कारण गहरी चिंता में रहते थककर उन्होंने छोटी बेटी की शादी कर दी। भूमि को संगीत से विशेष प्रेम था उसी क्षेत्र में उसने बहुत डिग्रियां भी हासिल कर ली थी पर भीतर संकोच के चलते वह अपनी कला को चार लोगो के समक्ष प्रस्तुत करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी। अपने रंग के कारण वह आत्मग्लानि से ग्रसित रहने लगी। हर्ष भूमि का बचपन का साथी था उनकी दोस्ती गंगा-जल की तरह पवित्र थी। हर्ष से वह हर बात साझा करती।

हर्ष ने ही व्यापारी असोसिएशन के एक कार्यक्रम दौरान उसे कुछ फिल्मी गीत गाने का अवसर दिया इतने लोगों के बीच स्टेज पर आकर अपने हुनर का प्रदर्शन करने हेतु उसे बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी, किन्तु इस सफलता ने उसके भीतर उत्साह भर दिया हर्ष से सलाह लेकर ही वह कार्यक्रमों की स्वीकृति देती। आत्मनिर्भर होने की संतुष्टि से बड़ी हिम्मत मिली। उसकी **सुमधुर आवाज के समक्ष उसके रंग की महत्ता गौण हो गई।**

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

लघुकथा – बांसुरी के बोल

एक दिन राधा और उसकी प्रिय सखियाँ ललिता, विशाखा, चंपकलता, चित्रा, सुदेवी, तुंगविद्या, इंदुलेखा और सुंदरी की कृष्ण की बाँसुरी के साथ मुलाकात हो गई। सभी एक साथ बाँसुरी की कटु आलोचना करते हुए बोली- **"तुम्हारे कारण हमने ब्रज छोड़ने का निर्णय लिया है।"**

बाँसुरी- "लेकिन मुझसे ऐसा कौन-सा अपराध हो गया?"

ललिता- "हमने तो कृष्ण से अनहद प्यार किया, फ़िर भी कृष्ण का निरंतर सान्निध्य सिर्फ़ तुम्हें प्राप्त हुआ।"

विशाखा- "तुमने पिछले जन्म में ऐसा कौन-सा पुण्य कार्य किया था, जिसके फलस्वरूप कृष्ण की गुलाब की पँखुड़ी जैसे होठों पर तुम्हें स्थान प्राप्त हुआ?"

बाँसुरी- "पिछले जन्म के बारे में मैं क्या जानू?"

चंपक लता- "जब कृष्ण तुम्हें बजाते हैं तब तुम अपने इशारों पर उन्हें नचाती हो। ऐसा लगता है जैसे वे तुम्हें अपने हाथों की सेज पर सुलाते हो और होठों का तकिया लगाते हो।"

चित्रा- "जब उनकी ऊँगलियाँ चलती हैं तब ऐसा लगता है जैसे वे तुम्हारे पैर दबा रहे हो।"

सुदेवी- "जब मंद समीर में कृष्ण के घुंघराले केश हिलते हैं तब ऐसा लगता है जैसे वे तुम्हें पंखा लगा रहे हो।"

तुंगविद्या- "बाँसुरी, तुम्हारे कारण ही अनहद प्यार करने के बावजूद

कृष्ण हमारे नहीं हो पाए।"
इंदुलेखा- "ऐसा लगता है कि तुम हमारी सौतन बन गई हो।"

सुंदरी- "नहीं, नहीं, अब हमें ब्रज में कदापि नहीं रहना।"

राधा- "यह मत भूलो कि कृष्ण के नाम के आगे मेरा नाम जुड़ा हुआ है।"

बाँसुरी- "कृष्ण के नाम के आगे मेरा नाम भी जुड़ा हुआ है। **वेणुगोपाल, बंसीधर, मुरलीधर** इत्यादि।"

राधा- "मैंने कृष्ण से सबसे अधिक प्यार किया, फ़िर भी होठों पर स्थान तुम्हें?"

बाँसुरी मुस्कुरा कर बोली- "कृष्ण के समीप आने के लिए मैंने जन्मोजन्म तक इंतजार किया है।"

राधा- "फ़िर भी समझ में नहीं आ रहा कि तुम्हें इतना निकट स्थान क्यों?"

बाँसुरी- **"कृष्ण का सानिध्य प्राप्त करने के लिए सबसे पहले मैंने अपने शरीर को कटवाया। अर्थात् काट-काटकर अलग कर दी गई। फ़िर मैंने अपना मन कटवाया। अर्थात् बीच में से खोखली कर दी गई। अंत में मैंने अपना अंग-अंग छिंदवाया। उसके बाद भी मैं वैसे ही बजी जैसे कृष्ण ने मुझे बजाना चाहा। मैं अपनी मर्जी से कभी नहीं बजी। यही अंतर है आप में और मुझ में।"**

बाँसुरी के बोल को सुनकर राधा और अन्य सारी गोपियाँ निशब्द हो गई।

- समीर उपाध्याय 'ललित' जी, सुरेंद्रनगर (गुजरात)

सनातन धर्म प्रश्नोत्तरी - महाभारत

1. महाभारत ग्रन्थ की रचना किसने की..?
- महर्षि वेद व्यास ने।

2. महाभारत ग्रन्थ को लिपिबद्ध किसने किया...?
- गणाधिपति भगवान श्री गणेश ने।

3. ग्रन्थ लिपिबद्ध करने के लिये भगवान श्री गणेश ने क्या शर्त रखी...?
- यही कि मेरी कलम रुकनी नहीं चाहिये। इसे स्वीकारते हुए महर्षि वेदव्यास ने भी शर्त रखी कि आप श्लोक का मर्म समझे बिना उसे लिखेंगे नहीं। महर्षि, बीच बीच में एक कठिन श्लोक बोल देते। सर्वज्ञ गणेश जी जब तक उन पर विचार करते उतने मे महर्षि बहुत से दूसरे श्लोकों की रचना कर देते।

4. महाभारत में कितने पर्व है...?
- पर्व अर्थात अध्याय। महाभारत में अठारह पर्व है।

5. इन पर्वों के क्या नाम है...?
- आदिपर्व, सभापर्व, वनपर्व, विराटपर्व, उद्योगपर्व, भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व, सौप्तिकपर्व, स्त्रीपर्व, शान्तिपर्व, अनुशासनपर्व, आश्वमेधिकपर्व, आश्रमवासिकपर्व, मौसलपर्व, महाप्रास्थानिकपर्व तथा स्वर्गारोहण पर्व।

6. भीष्म के माता-पिता का क्या नाम था...?
- पूरुवंश के प्रतापी राजा शान्तनु उनके पिता व गंगा उनकी माता का नाम था।

7. देवव्रत कौन था...?
- महाबली भीष्म का नाम ही देवव्रत था। उनके पिता शान्तनु सत्यवती से विवाह करना चाहते थे लेकिन सत्यवती के पिता ने यह शर्त रखी कि सत्यवती का पुत्र ही राजा बनेगा। शान्तनु अपने ज्येष्ठ पुत्र देवव्रत को ही राजा बनाना चाहते थे। देवव्रत को जब इस घटनाक्रम का पता चला तो उन्होंने सत्यवती के पिता को सन्तुष्ट करने के लिये यह प्रतिज्ञा की थी कि सत्यवती का पुत्र ही राजा बनेगा और वह स्वयं आजीवन अविवाहित रहेंगे। ऐसी कठोर व अटल प्रतिज्ञा करने पर देवव्रत का नाम भीष्म पड़ा।

8. शान्तनु के कितने पुत्र थे...?
- चित्रांगद और विचित्रवीर्य। चित्रांगद की युवावस्था में ही मृत्यु हो गयी। विवाह के बाद ही विचित्रवीर्य का भी निधन हो गया। नियोग प्रथा से विचित्रवीर्य की पत्नी अम्बिका से धृतराष्ट्र व अम्बालिका से पाण्डु का जन्म हुआ।

9. धृतराष्ट्र व पाण्डु किस व्याधी से ग्रस्त थे...?
- धृतराष्ट्र जन्म से अंधे थे तो पाण्डु पीलिया रोग से ग्रस्ति थे।

10. विदुर कौन थे...?
- कौरव राजवंश में दासी पुत्र थे। लेकिन धर्म, न्याय व राजनीति के बहुत बड़े विद्वान थे। अपनी योग्यता के बल पर वे कौरव सभा में मंत्री रहे। उनकी न्यायप्रिय नीति, धर्मपरायण नीति "विदुर नीति" के नाम से जानी जाती है। उन्हें धर्मराज का अवतार माना जाता है।

11. गान्धारी कौन थी...?
- गान्धार राज की राजकुमारी थी। इनका विवाह धृतराष्ट के साथ हुआ। जब उन्हें पता चला कि उनके होने वाले पति अन्धे है तो गान्धारी ने भी अपनी आंखों पर पट्टी बांध ली। गान्धारी कौरव राजकुमारों की माता थी।

12. शकुनि कौन था...?
- गान्धारी का भाई व कौरव राजकुमारों का मामा। द्यूतक्रीड़ा में शकुनि ने ही अपने पासों से पाण्डवों का हराया। शकुनि को कौरव राजकुमारों का नीति निर्माता कहा जाता है।

13. कुन्ती कौन थी...?
- कुन्ती भोज की पुत्री, जिसने स्वयंवर में महाराज पाण्डु का वरण किया। कुन्ती से पाण्डु राजकुमार- युधिष्ठिर, भीम व अर्जुन का जन्म हुआ।

14. माद्री कौन थी...?
- मद्रराज की राजकुमारी व महाराज पाण्डु की दूसरी पत्नी। माद्री से पाण्डु राजकुमारों- नकुल व सहदेव का जन्म हुआ।

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राजस्थान)

हरतालिका तीज व्रत

हरतालिका तीज व्रत श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को हस्त नक्षत्र के दिन आता है। इस दिन सुहागन और कुंवारी लड़कियां गौरी-शंकर की पूजा करती हैं। मान्यता है कि हरतालिका तीज का व्रत सुहागिन महिलाएं अपने पति की दीर्घायु के लिए निर्जला व्रत रखती हैं और कुंवारी लड़कियो मनचाहे वर की प्राप्ति के लिए व्रत रखती है।

यह त्योहार भारत के लगभग सभी प्रांतों में मानते है पर मुख्य रूप से महाराष्ट्र, बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मध्य प्रदेश में मनाया जाता है। हरतालिका व्रत को **"हरतालिका तीज या तीजा"** भी कहते हैं। कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में इस व्रत को **"गौरी हब्बा"** के नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश और बिहार में मनाया जाने वाला यह त्योहार करवा चौथ से भी कठिन माना जाता है क्योंकि जहां करवा चौथ में चांद देखने के बाद व्रत खोल दिया जाता है वहीं इस **व्रत में पूरे दिन निर्जला व्रत किया जाता है और अगले दिन पूजन के पश्चात ही व्रत खोला जाता है।**

सर्वप्रथम इस व्रत को माता पार्वती ने भगवान शिव शंकर के लिए रखा था। इस दिन विशेष रूप से भगवान गौरी-शंकर का ही पूजन किया जाता है। इस दिन व्रत करने वाली स्त्रियां सूर्योदय से पूर्व ही उठ जाती हैं और नहा धोकर पूरा श्रृंगार करती हैं।

शास्त्रों के अनुसार महिलाएं संकल्प लेती है जिसमे **"उमा महेश्वर सायुज्य सिद्धये हरतालिका व्रतमहं करिष्ये"** और समस्त पूजा सामग्री एकत्रित करती है। पूजन के लिए केले के पत्तों से मंडप बनाकर गौरी-शंकर की प्रतिमा स्थापित की जाती है। इसके साथ पार्वती जी को सुहाग का सारा सामान चढ़ाया जाता है और शिवजी भगवान को धोती और अँगोछा चढ़ाते है। रात में भजन, कीर्तन करते हुए जागरण कर तीन बार आरती की जाती है और शिव पार्वती विवाह की कथा सुनी जाती है।

इस व्रत के व्रती को शयन करना निषेध है इसके लिए उसे रात्रि में भजन कीर्तन के साथ रात्रि जागरण करना पड़ता है प्रातः काल स्नान करने के पश्चात् श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक ब्राह्मणी या किसी सुहागिन महिला को श्रृंगार सामग्री, वस्त्र, खाद्य सामग्री, मिष्ठान्न एवं यथा शक्ति आभूषण का दान करना चाहिए तथा धोती और अंगोछा ब्राह्मण को दे।

लिंग पुराण की एक कथा के अनुसार माँ पार्वती ने अपने पूर्व जन्म में भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए हिमालय पर गंगा के किनारे अपनी बाल्यावस्था में अधोमुखी होकर घोर तप किया। इस दौरान उन्होंने अन्न का सेवन नहीं किया। काफी समय सूखे पत्ते खाकर और कई वर्षों तक उन्होंने केवल हवा खाकर ही व्यतीत किया। माता पार्वती की यह स्थिति देखकर उनके पिता अत्यंत दुखी थे। इसी दौरान एक दिन महर्षि नारद भगवान विष्णु की ओर से पार्वती जी के विवाह का प्रस्ताव लेकर माँ पार्वती के पिता के पास पहुंचे, जिसे उन्होंने सहर्ष ही स्वीकार कर लिया। पिता ने जब अपनी पुत्री पार्वती को उनके विवाह की बात बताई तो वह बहुत दुखी हो गई और जोर-जोर से विलाप करने लगी। फिर एक सखी के पूछने पर माता ने उसे बताया कि वह यह कठोर व्रत भगवान शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए कर रही हैं जबकि उनके पिता उनका विवाह विष्णु से कराना चाहते हैं। तब एक सहेली की सलाह पर माता पार्वती घने वन में चली गई और वहां एक गुफा में जाकर भगवान शिव की आराधना में लीन हो गई। तब माता के इस कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने उन्हें दर्शन दिए और इच्छा अनुसार उनको अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

मान्यता है कि इस दिन जो महिलाएं विधि-विधान पूर्वक और पूर्ण निष्ठा से इस व्रत को करती हैं, उन्हें अपने मन के अनुरूप पति की प्राप्ति होती हैं। साथ ही **यह पर्व दांपत्य जीवन में खुशी बरकरार रखने के उद्देश्य से मनाया जाता है।**

.....

आगामी त्योहारों की सूचि

भारत त्योहारों का देश है, इन त्योहारों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी संस्कृति को बचाये रखने की हमारी ये एक पहल है, जिसमे आप भी जुड़ सकते है।

आगामी माह (सितम्बर) में आने वाले त्योहारों की सूचि में से आप किसी पर लेख लिखना चाहते है तो हमे सूचित करें –

- ऋषि पंचमी
- संवत्सरी पर्व
- दुबडी साते
- राधा अष्टमी
- तेजा दशमी
- परिवर्तिनी एकादशी
- वामन जयंती
- ओणम
- अनंत चतुर्दशी
- श्राद्ध पक्ष
- हिंदी दिवस
- विश्वकर्मा पूजा
- इंदिरा एकादशी
- पितृ विसर्जन
- दुर्गा पूजा/नवरात्रि प्रारंभ

संपर्क सूत्र - paramparabhartiya@gmail.com

प्रथम पूजनीय देव 'गणपति बप्पा'

गणेश उत्सव क्यों मनाया जाता है?
जानने के लिए आइकन को स्पर्श करें – www.

सतगुरु – पुराण – सत का आना

सतगुरु रूपी संत के ज्ञान द्वारा सत का आना।

हे परमात्मा ! आपको कोटि-2 वंदन करता हूँ।
समस्त तीन लोक के देवताओं को आह्वान करता हूँ, सब संतों से विनती करता हूँ कि **परमात्मा की सत्ता सतगुरु द्वारा ही प्राप्त होती है।** यह बात आज जगत नहीं जान रहा है।

"राम का नाम सत है सत से मुक्त है"। आत्म कल्याण में मनुष्य संतों की विधि से राम नाम को श्वांस-प्रश्वांस से जाप करेंगे तो उसका "सतशब्द-ने: अक्षर अव्यय पुरुष" प्रकट होता है, जिसके यह अव्यय पुरुष आता है वह आत्मा यहाँ पर सुख भोगकर अन्त में परमधाम जाती है।

"सांस ऊसांस कहे हरिनाम, फिरे रसना मुख में दिन रात।
धीरज ध्यान अडोल न डोले, आसण मार ऊकाऊ छाती।
नाल समीसल राखत नाही, मोडत अंग न बंधत बाती।
मन कूं थोब पवन सूं मेला, सुरत समोय निरत कर साथी।
सुखराम कहे यूं ध्यान धरो, ज्यूं दीप सूं जोत जले है बाती।।"

मुख्य बिंदु- परमात्मा द्वारा ऐसे औदाधारी को अपना शब्द देकर अणमै वाणी बनाने का औदा देते है। एक समय में एक ही सतगुरु का औदा होता है। यह बात आज आपा पंथी शिष्य व गुरुओं को यह बात उचित नहीं लगती। इसी को समझाने का तुच्छ प्रयास कर रहा हूँ। **राम राम की विधि से आप रामस्नेही बनेंगे। उसके बाद भी दोनों दीपक जलाये रखना है तभी तो यह सनातन धर्म सजेगा।**

संत शिष्य - जगदीश प्रसाद जागेटिया, ब्यावर (राजस्थान)

जैसा सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं **15 अगस्त, 2022 को देश की आजादी के 75 साल पूरे होने जा रहे हैं।** इसी बात को ध्यान में रखते हुए 75वीं वर्षगांठ से 75 सप्ताह पूर्व यानि 12 मार्च, 2021 से आजादी का अमृत महोत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है। सरकार ने इस अमृत महोत्सव के लिये निम्न पाँच सूत्र जारी किये हैं –

1] आजादी का अमृत महोत्सव यानी आजादी की ऊर्जा का अमृत।
2] आजादी का अमृत महोत्सव यानी स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत।
3] आजादी का अमृत महोत्सव यानी नए विचारों का अमृत।
4] आजादी का अमृत महोत्सव यानी नए संकल्पों का अमृत।
5] आजादी का अमृत महोत्सव यानी आत्मनिर्भरता का अमृत।

अब जहाँ तक आजादी की ऊर्जा का अमृत वाली बात हैं, तो उसका अनुभव तो हमें अपने छुटपन से ही है यानि जब हम विद्यालय में पढ़ते थे, **तब 23 जनवरी को कलकत्ते के हर गली में सुभाष चन्द्र बोस की जयंती पूरे सम्मान, आदर व उमंग और उत्साह से मनाते थे।** उसी क्रम में विद्यालय में गणतंत्र दिवस हो या स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्र ध्वज फहराने वाले कार्यक्रम पश्चात सीधे रेड रोड की तरफ परेड अवलोकनार्थ भाग जाते थे, ताकि समय पर पहुँच ठीक से परेड देख पायें। आज भी हम अपने मोहल्ले के समीप पार्क के अलावा नजदीकी विद्यालय में झंडारोहण पर हाजिर हो सभी को प्रोत्साहित करने में हमेशा आगे रहते हैं साथ ही साथ इस ढलती उम्र के कारण हम तो परेड देखने नहीं जाते हैं परन्तु बाकी सभी को परेड देख आने के लिये प्रेरित अवश्य करते ही हैं और तो और और छोटे- छोटे समूह बना भेज देने का बंदोबस्त भी कर देते हैं।

अब जब स्वाधीनता सेनानियों से प्रेरणाओं का अमृत वाली बात हैं, तो उसकी हमें अपने छुटपन से ही आदत है यानि हम अपने बचपन के दिनों से ही मोहल्ले में राष्ट्र ध्वज फहराने वाले कार्यक्रम में न केवल भाग लेते, बल्कि हर साल पहले से निश्चित किये हुये एक स्वतंत्रता सेनानी पर चर्चा वाले आयोजन को सफल बनाने में अपना योगदान देते रहे हैं। इस तरह का आयोजन बड़े, बुजुर्ग व विद्यालय में पढ़ाने वाले शिक्षकों के मार्ग दर्शन में आयोजित होता था।

उसमें उन स्वतंत्रता सेनानी के विषय में बहुत कुछ जानने को मिलता था। मैं भी हमेशा पूरी तैयारी के साथ उस परिचर्चा में अपनी हिस्सेदारी निभाता था। इस तरह बीते सालों की तरह आज भी आजादी के महत्व को पूरी निष्ठा से निभाने की चेष्टा जारी है यानि आज भी हम अपने स्वतंत्रता सेनानियों की गाथायें हर प्रकार के माध्यम से सभी के बीच पहुचाने का न केवल प्रयास करते हैं बल्कि राष्ट्रवाद के प्रति समर्पित रहने के लिये प्रेरित करते रहते हैं ।

अब नए विचारों का अमृत वाले तथ्य पर मेरा ऐसा मानना है कि हम अवकाश प्राप्त लोगों का दायित्व है कि युवाओं को हम शिक्षित करें। ध्यान दे लें कि यहाँ शिक्षित का मतलब उन्हें पढ़ाना लिखाना से नहीं हैं बल्कि उन्हें सरकार द्वारा प्रायोजित योजनाओं की पूरी पूरी सही जानकारी से अवगत कराने से है ताकि वे **21वीं सदी की प्रौद्योगिकी संचालित व्यवस्थाओं पर आधारित बुनियादी ढांचा का भरपूर लाभ उठा कर अपने नये नये विचारों के अनुरूप सरकार की योजनाओं का लाभ लें और समाज व देश की प्रगति में अपना योगदान दें।**

इसी तरह नए संकल्पों का अमृत वाले तथ्य पर हमारा यह दायित्व बनता है कि हम आतंकवाद और राजनीतिक तुष्टिकरण पर जो लोग हमारे संविधान का गलत लाभ उठाते हुए हमारी प्राचीन मान्यताओं और संस्कृति पर चोट पर चोट किए जा रहे हैं, आतंकवाद को राजनीतिक संरक्षण दिये जा रहे हैं उन सभी की मानसिकता को उजागर करते रहने के साथ साथ प्रजातांत्रिक स्वरूप को बनाए रखने के लिए अपनी सकारात्मक भूमिका अदा करते रहें। हम अपने से छोटों को हमेशा यह समझाते रहते हैं **कि 'हमें ऐसा कोई भी काम नहीं करना है जिसके चलते देश की छवि जरा सी भी धूमिल हो'**।

इसी क्रम में सरकार ने **"स्वच्छ भारत अभियान"** शुरू किया हुआ है जिसके तहत एक प्रचारक के रूप में इसका हिस्सा बनकर हम अपने साथियों को दैनिक कार्यों में से कुछ घंटे निकालकर भारत में स्वच्छता संबंधी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं ताकि कचरा मुक्त वातावरण बना पायें। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिये **आसपास की सफाई के अलावा सभी साथियों की सहभागिता से अधिक-से-अधिक पेड़ लगाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है क्योंकि अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है।** इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने में हम सभी का एक सकारात्मक भूमिका निभाना पावन कर्तव्य है।

यहाँ यह भी उल्लेख आवश्यक है कि हमारी **सरकार विश्व स्तरीय खिलाड़ी तैयार करने के लिए पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी से संगठित एवं संचालित योजनाएं एवं कार्यक्रम बनाकर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित कर रही हैं।** इस तरह न केवल खिलाड़ी बल्कि अन्य लोग भी जो खेलों से जुड़े हैं वे अपना अपना योगदान देश को गौरवान्वित करने में दे रहे हैं। इसी तरह हम में से जिनकी रुचि खेलों में है वे खेलों को माध्यम बना देश को गौरवान्वित करने में अपना योगदान दे सकते हैं। **भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ठीक इसी तरह के दृढ़ संकल्प की जरूरत है।** चूंकि हमारा देश आबादी के हिसाब से विश्व में दूसरा स्थान रखता है इसलिये आत्मनिर्भर भारत के लिये यह आबादी हमारी ऊर्जा का स्रोत है। इसलिये यह आवश्यक है हमारी मांग एवं आपूर्ति श्रृंखला (सप्लाई चेन) की ताकत का उपयोग पूरी क्षमता से किया

जाना चाहिये यानि हमारे द्वारा उत्पादित सभी वस्तुओं की मांग बढ़ाने के साथ-साथ इसे पूरा करने के लिए आपूर्ति श्रृंखला के सभी हितधारकों के बीच सामंजस्य को मजबूत बनाये रखना सरकार के साथ हम सभी की जिम्मेदारी है।

अन्त में आत्मनिर्भरता का अमृत वाले तथ्य पर भी हमारा यह दायित्व बनता है कि **हमारी सरकार ने बेरोजगारी दूर करने के लिये यानि युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये जो जो योजनायें चालू की हैं, उन योजनाओं की पूरी पूरी सही जानकारी सभी तक न केवल पहुँचायें बल्कि उन योजनाओं का लाभ उठाने के लिये प्रेरित भी करें।**

यह सर्वविदित है कि विश्व की उभरती आर्थिक ताकत के रूप में उभर रहा हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर है। लिखने का यह मतलब है कि भारत में विदेशी पूंजी निवेश बढ़ रहा है। देश इंफ्रास्ट्रक्चर और सेवा-सुविधाओं के मामले में आगे बढ़ रहा है। यह सब नागरिकों द्वारा चुकाये जाने वाले टैक्स से ही तो सम्भव हो रहा है। इसलिये जैसा हम हमेशा चर्चा में सुनते हैं कि हमारे यहाँ बेशुमार कालाधन है तो उस ओर भी हम सभी को सजग रहना है और ऐसे घूसखोर लोगों का पर्दाफाश करते रहना है। उपरोक्त उल्लेखित के अलावा और भी ऐसे अनेकों क्षेत्र हैं जहाँ हमें अपनी सकारात्मक भूमिका, स्वयं की सुविधा, समय का ध्यान रख, निभाने का पूरा पूरा प्रयत्न करते रहना है ताकि हम हमारे देश को सच्चे अर्थों में एक महान देश बनाने में अपना ज्यादा से ज्यादा योगदान दें सकें।

याद रखें सच्चे नागरिक को अपने देश से ही नहीं बल्कि उससे जुड़ी हर वस्तु से प्यार होता है और उसके प्रति समर्पित भाव होता है। **हमें भी अपनी मातृभूमि के लिए कुछ भी कर गुजरने की तमन्ना रखनी चाहिये क्योंकि अच्छे, ईमानदार व कर्मठ नागरिक ही देश को शक्ति संपन्न, समृद्ध व संगठित बनाते हैं।** याद रखें एक आदर्श नागरिक स्वेच्छा से अनुशासन का पालन ही नहीं करता है बल्कि वह देश के कायदों व कानूनों का पूरी पूरी निष्ठा से निर्वहन भी करता है। कानून को बनाए रखने में सरकार की सहायता करता है। हमें बिना स्वार्थी हुये राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों को समझना चाहिए क्योंकि यह हम नहीं, अन्य लोग हैं, जो पीड़ित व लाभार्थी दोनों हैं।

अब मैं आप सभी प्रबुद्ध पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ उस वाक्य की ओर जो **12 मार्च, 2021 को 'आज़ादी का अमृत महोत्सव'** के उद्घाटन पर प्रधानमंत्री ने देश के नाम अपने सारगर्भित संबोधन में **श्रीमद्भागवत गीता में प्रभु श्री कृष्ण द्वारा कहे गये - 'सम-दुःख-सुखम् धीरम् सः अमृतत्वाय कल्पते' अर्थात्, जो सुख-दुःख, आराम चुनौतियों के बीच भी धैर्य के साथ अटल, अडिग और सम रहता है, वही अमृत को प्राप्त करता है, अमरत्व को प्राप्त करता है।**

अन्त में यही बताना चाहता हूँ कि उपरोक्त मंत्र से प्रेरणा लेकर हम सभी इस अमृत महोत्सव समय के दौरान भारत के उज्ज्वल भविष्य का अमृत प्राप्त करने में अवश्य सफल हो पायेंगे। **याद रखें भारत जब आत्मनिर्भर बनेगा तभी विश्व को नई दिशा दिखा पायेगा।** इसलिये मैं सभी प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन करता हूँ, आइये, **हम सब दृढ़संकल्प होकर इस राष्ट्र यज्ञ में अपनी अपनी भूमिका निभाने का भरपूर प्रयास करें।**

- गोवेर्धन दास बिन्नानी जी 'राजा बाबू', बीकानेर (राजस्थान)

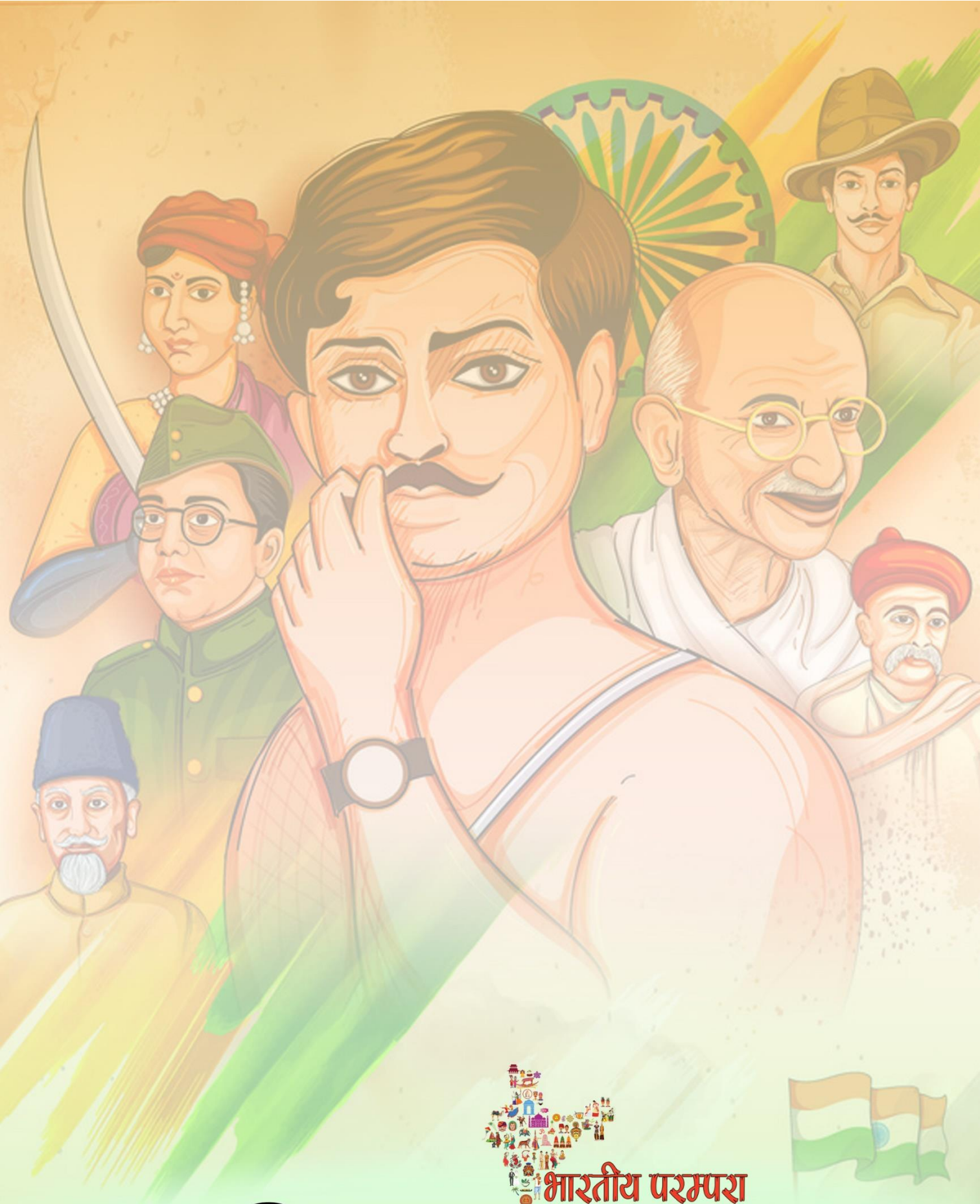

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

हार्दिक आभार

www.bhartiyaparampara.com